To,

Dr Shanta Sinha,
Chairperson,
National Commission for Protection of Child Rights (NCPCR),
Delhi

11th July 2011

Sub: Report of rape and encounter death of minor in Surguja, Chhattisgarh

Dear Dr Shantha Sinha,

On behalf of Women against Sexual Violence and State Repression (WSS), we wish to draw your immediate attention to reports about the gang-rape rape and murder of a minor girl last week in Sarguja district, Chhattisgarh, in an alleged encounter with Maoists.

We are enclosing the said reports and we strongly urge you to initiate immediate inquiry and action in this matter.

We would also like to bring to your notice that this is only one of several incidents of the violation of rights of minors that have been reported from Chhattisgarh, Orissa and Jharkhand. In the past we have brought before you cases of such violations in Jharkhand and Orissa. In some the Commission has taken quick action and some of the young victims have been spared further harm. But there are sufficient indications that these may be just the tip of the ice berg.

We urge that along with taking quick action in this specific case, NCPCR also takes steps to address the issues arising from militarization of parts of these three states, the impunity with which the police and security forces are behaving in these areas, and its devastating impact on the lives of the young, especially the young girls.

Yours,

Indira Chakravarthi, Rinchin, Kalpana Mehta
(for WSS)

THREE ENCLOSURES BELOW

ENCLOSURES:

1. Here is the story from today's Hindu

http://www.thehindu.com/news/national/article2216893.ece

Probe girl's encounter, says Congress
Aman Sethi

SP says they are yet to get post-mortem results

A delegation headed by Chhattisgarh Pradesh Congress Committee chief Nand Kumar Patel has submitted a memorandum to the Inspector-General of Police, Ambikapur range, demanding a thorough investigation into a July 6 incident in which a girl was fatally shot.

While the police claim that Meena Khalko, 16, from Kharcha village in Surguja, was shot dead during a prolonged encounter with armed cadres of the banned Communist Party of India (Maoist) the Congress delegation and local press reports say the girl had no contact with the Maoists.

"On the night of July 5, a party of policemen left on patrol based on specific intelligence," said Balrampur Superintendent of Police J.S. Meena, "At 3.30 a.m., they came across a large party of Maoists which opened fire. The police fired back in self-defence. After the encounter, they found a wounded woman Maoist who gave her name as Meena [Khalko]. She was brought back to the Balrampur hospital but was declared dead on arrival."

The SP said the police recovered a muzzle-loading shotgun, a mobile phone, and cartridges from the site. To a question, he said Khalko was wearing civilian clothes and was not in uniform.

"There is no doubt in my mind that Meena [Khalko] was neither a Naxalite nor was there any encounter," said T.S. Singh Deo, a senior Congress leader from Surguja, who visited her village. "We met over 1,000 villagers, village elders, sarpanches and her immediate family and they were all unanimous in their opinion that Khalko had never had any contact with the Maoists."

The controversy arose when Yagnyawalky Vashisht, a reporter for Sahara Samay, visited Kharcha village soon after the incident and found no evidence of an encounter. According to his story, Mr. Vashist was unable to find any spent shells, blood stains, or physical signs of an exchange of fire. He also interviewed a doctor charged with conducting the post-mortem, who said Khalko had been shot twice from a distance of about 50 metres.

The SP said the police were yet to receive the post-mortem results. "We are conducting a detailed investigation into the incident," he said.

According to reports in the local newspapers, Chief Minister Raman Singh has ordered an enquiry into the incident.

2. video report in Sahara Samay on the same subject: http://www.facebook .com/video/ video.php? v=1962518780726& comments

3. ये कांगो हैं, छत्तीसगढ़ नहीं

Posted On July 7, 2011 Tags:

आवेश तिवारी

AAA

सरगुजा के नवाडीह टोले के करचा गाँव में सन्नाटा भी चीखता नजर आता है ,मीना की लाश साफ़ बताती है कि मरने से पहले आततायी पुलिस ने पहले उसके मन और फिर उसके तन को किस कदर उधेडा होगा |पुलिस ने इस १६ साल की लड़की के साथ पहले बलात्कार किया और फिर उसे मौत की नींद सुला दिया ,दमन का ये दौर यहीं ख़त्म नहीं हुआ ,आला अधिकारियों के कहने पर मौत के फ़साने को छुपाने के लिए उसके पास नक्सली साहित्य और हथियार रख दिए | मुमकिन है कि आपको उसकी लाश और फिर करचा गाँव को देखकर अफ्रीका के कांगो की याद आये जहाँ सैनिकों ने एक ही रात में सैकड़ों महिलाओं के साथ बलात्कार किया और फिर उन्हें गोलियों से भुन दिया |नवाडीह नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ के सरगुजा का वो इलाका है ,जहाँ खबर भी खामोश रहती है

| समकालीन पत्रकारिता की राजधानी बनते जा रहे छतीसगढ़ में मीना की मौत की खबर भी शर्मनाक

ढंग से रायपुर से छपती है वो भी पुलिस का वर्जन कि "मीना एक नक्सली थी और कई नक्सली वारदातों में शामिल थी "|शायद मीना की हत्या का सच सामने नहीं आता जब सरगुजा के जमीन से जुड़े पत्रकार और सहारा समय के रिपोर्टर याज्ञवल्क्य वशिष्ठ मौके पर नहीं पहुँचते ,वो कहते हैं ये घटना बताती है कि छतीसगढ़ में मानवाधिकार आहत और खून से लथपथ है |

मीना के माँ बाप के आंसू रुकते नहीं रुकते हैं ,बेटी के सर पर हाँथ फेरते हुए बिलख रहा उद्धेश्वर कहता है "साहब वो नक्सली नहीं थी ,वो तो माँ के साथ मवेशी चराने गयी थी ,जब शाम को वो नहीं आई तो हमें लगा कि वो सहेली के घर रुक गयी है लेकिन उसे रास्ते में घर लौटते वक्त मार डाला गया |ग्रामीण कहते हैं "उसे क्यूँ मार डाला ,वो तो गाँव के बाहर भी कभी नहीं गयी "| टेडहर नदी के पास जहाँ पुलिस लगभग ३४ नक्सलियों के साथ जबरदस्त मुठभेड़ होने का दावा कर रही थी ,वहां एक भी गोलियों के निशान मौजूद नहीं थे ,वहीँ ग्रामीणों ने भी बताया कि हमने एक भी गोली की आवाज नहीं सुनी पुलिस द्वारा मीना की लाश के पास रखे गए नक्सली साहित्य ,डेटोनेटर्स और हथियारों का सच उस वक्त नंगा हो जाता है |जब मीना की भाभी बताती है कि पुलिस ने उस पर ये बयान देने का दबाव डाल था कि वो रात को घर से गायब थी ,जब उसने इससे इनकार किया तो उसके पति समेत पूरे परिवार को जेल में ठुंसे जाने की धमकी दे दी गयी |

मीना का पोस्टमार्टम करने वाले चिकित्सक बताते हैं कि उसे ५० मीटर दूर से दो अलग अलग दिशाओं से गोली मारी गयी ,चिकित्सकों का कहना है कि मारने से पहले उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किये जाने का पता चला है ,हालाँकि छतीसगढ़ पुलिस मुठभेड़ को फर्जी मानने से साफ़ इनकार कर रही है |जब इस सम्बंध में बलरामपुर पुलिस जिले में मौजूद इस इलाके के एसपी से बात की गयी तो उन्होंने स्वीकार किया कि उसके खिलाफ कोई भी मामला हमारे यहाँ दर्ज नहीं था ,हालाँकि पूर्व में घटी कई घटनाओं जिनमे नक्सलियों द्वारा गाड़ियों को फूंके जाने की घटना भी शामिल है में उस महिला का नाम आया है |जब एस पी बलरामपुर से ये पूछा गया कि क्या इनकाउन्टर से पहले आपसे इजाजत ली गयी थी उन्होंने कहा कि सारी कार्यवाही मेरे संज्ञान में हुई है |जब पूरे मामले को लेकर डीजीपी छत्तीसगढ़ विश्वरंजन से बात करने की कोशिश की गयी तो उन्होंने की भी प्रकार की टिपण्णी करने से साफ़ इनकार कर दिया | छत्तीसगढ़ में अनपढ़ निरीह आदिवासियों के साथ पुलिसिया बर्बरता का ये पहला मामला नहीं है ,आपरेशन ग्रीन हंट के दौरान जंगलों में सुरक्षाबलों द्वारा जो कहानी लिखी जा रही है वो रौंगटे खड़ा कर देने वाली है |लगभग हर वर्ष यहाँ सैकड़ों महिलायें पुलिसिया

बर्बरता का शिकार हो रही है ,इनमे से कुछ ही घटनाएँ सुर्खियाँ बन पाती हैं ,बाकी बीहड़ों में दम तोड़ देती हैं |२००७ में सरगुजा में ही लेधा नाम की एक महिला के सामने पहले उसके पति का इनकाउन्टर कर दिया गया था फिर उसके दुधमुंहे बच्चे के सामने पुलिस कर्मियों ने उसके साथ दस दिनों तक सामूहिक बलात्कार किया ,उस घटना के बाद से ही लेधा का बच्चा चलने फिरने में असमर्थ है |छतीसगढ़ में नक्सली उन्मूलन के नाम पर सुरक्षाबल आदिवासी महिलाओं को अपना निशाना बनाकर माओवादियों को कमजोर करने का नुख्सा आजमा रही है,लोकतंत्र लहूलुहान है और ओंधे मुंह गिरा हुआ है |